Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 10 अधिनायक

अधिनायक कवि परिचय रघुवीर सहाय (1929–1990)

जीवन–परिचय–
नई कविता के प्रमुख कवि रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसम्बर, 1929 को लखनऊ, उत्तरप्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री हरदेव सहाय था, जो पेशे से शिक्षक थे। रघुवीर सहाय की सम्पूर्ण शिक्षा लखनऊ में ही हुई। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया। संगीत सुनने और फिल्में देखने में उनकी विशेष अभिरुचि थी। उन्होंने 'कौमुदी' कविता केन्द्र की स्थापना की और उसका संचालन किया।

रघुवीर सहाय पेशे से पत्रकार थे। उन्होंने पत्रकारिता का आरंभ 'नवजीवन' लखनऊ से किया। इसके बाद 'समाचार विभाग' आकाशवाणी, नई दिल्ली और फिर नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली) में विशेष संवाददाता के रूप में काम किया। उन्होंने 1979 से 1982 तक 'दिनमान' के प्रधान संपादक के रूप में भी काम किया। उनका निधन 30 दिसम्बर, 1990 को हुआ।

रचनाएँ–रघुवीर सहाय अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' के माध्यम से कवि रूप में लोगों के सामने आए। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं

कविताएँ–सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो–हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ।

काव्यगत विशेषताएँ–रघुवीर सहाय नई कविता के कवि हैं। नई कविता के माध्यम से कविता की अग्रगति तथा विकास के लिए नई रचना भूमि, नई–नई भाषा, मुहावरा और रचनातंत्र की उद्भावना की शुरुआत हुई। श्री सहाय दूसरा सप्तक के सात कवियों में शामिल थे। उनकी कविताएँ संवेदना, सरोकार विषयवस्तु, अनुभव, भाषा, शिल्प आदि अनेक तलों पर अपने संकल्प और व्यवहार में नई थी। उनकी विशिष्ट मनोरचना और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति कहानियों तथा पत्रकारिता में भी हुई। उनकी पत्रकारिता उनकी कविता को प्रासंगिक एवं प्रभावी बना देती है। उनकी कविताओं में व्याप्त तथ्यात्मकता मात्र तथ्य न रहकर 'सत्य' बन जाता है।

रघुवीर सहाय की कविताओं में परिवेश की सच्चाई की साहसपूर्ण प्रतिक्रिया मिलती है। यह प्रतिक्रिया तीखी, दाहक और निर्मम हो उठती है। वे अपनी कविता में व्यंग्य–कटाक्ष, घृणा और क्रोध का सार्थक प्रयोग करते हैं जिसका उद्देश्य परपीड़न का सुख नहीं, सच्ची रचनात्मकता या अर्थपूर्ण नई सामाजिकता होती है।

अधिनायक कविता का सारांश

'अधिनायक' शीर्षक कविता रघुवीर सहाय द्वारा लिखित एक व्यंग्य कविता है। इसमें आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण कटाक्ष है। राष्ट्रीय गीत में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है। आजादी मिलने के इतने वर्षों के बाद भी आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया। कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है।

हरचरना स्कूल जाने वाला एक बदहाल गरीब लड़का है। कवि प्रश्न करता है कि राष्ट्रगीत में वह कौन भारत भाग्य विधाता है जिसका गुणगान पुराने ढंग की ढीली–ढाली हाफ पैंट पहने हुए गरीब हरचरना गाता है। कवि का कहना है कि राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा–सुथन्ना' पहने वही राष्ट्रगान दुहराता है जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है।

कवि प्रश्न करता है कि वह कौन है जो मखमल टमटम वल्लभ तुरही के साथ माथे पर पगड़ी एवं चँवर के साथ तोपों की सलामी लेकर ढोल बजाकर अपना जय–जयकार करवाता है। अर्थात्, सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रिक संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी राजसी ठाठ–बोट वाले भड़कीले रोब–दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाये जा रहा है।

कवि प्रश्न करता है कि कौन वह सिंहासन (मंच) पर बैठा जिसे दूर–दूर से नंगे पैर एवं नरकंकाल की भाँति दुबले–पतले लोग आकर उसे (अधिनायक) तमगा एवं माला पहनते हैं। कौन है वह जन–गण–मन अधिनायक महावली से डरे हुए लोग से मन के रोज जिसका गुणगान बाजा बजाकर करते हैं।

इस प्रकार इस कविता में रघुवीर सहाय ने वर्तमान जनप्रतिनिधियों पर व्यंग्य किया है। कविता का निहितार्थ यह है मानो इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा ही सचमुच अधिनायक अर्थात् तानाशाह बनने की है।

कविता का भावार्थ 1.
राष्ट्रगीत में भला कौन वह
भारत–भाग्य–विधाता है
फटा सुथन्ना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है।

व्याख्या–प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्य पुस्तक दिगंत भाग–2 के रघुवीर सहाय विरचित "अधिनायक" शीर्षक कविता से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कवि ने उन जनप्रतिनिधियों पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया है जो इतने दिनों की आजादी के बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं ला पाये हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि जानना चाहता है कि वह कौन भाग्य विधाता है जिसका गान हरचरना नाम का एक गरीब विद्यार्थी कर रहा है। वह गरीब विद्यार्थी है। अपनी लाचारी का प्रमाण लिए हुए वह राष्ट्रीय गीत गाता है। कवि का यह कटु व्यंग्य बड़ा ही उचित एवं सामयिक है। सचमुच, आज लाखों गरीब छात्र अपने विद्यालयों में बिना मन के राष्ट्रीय गीत का गान करते हैं। उन्हें नहीं पता कि वे किसका गान कर रहे हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने आज के सत्ताधारी नेताओं पर कटाक्ष किया है। ये सत्ताधारी नेता आज तानाशाह बने हुए हैं।

2. *मखमल टमटम बल्लभ तुरही*
पगड़ी छत्र–चवर के साथ
तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर
जय जय कौन कराता है।

व्याख्या–प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्यपुस्तक दिगंत, भाग–2 के रघुवीर सहाय रचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से ली गई है। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बदली हुई जनतांत्रिक व्यवस्था में भी सत्ताधारी वर्ग के राजसी ठाट–बाट एवं रोब–दाब का वर्णन किया है। कवि प्रश्न पूछता है कि वह कौन व्यक्ति है जो मखमल, टमटम, बल्लभ, तुरही,

https://www.evidyarthi.in/

पगड़ी छतरी एवं चेवर लगाकर तोप के गोले दागकर, ढोल नगाड़ा बजाकर जय–जयकार करवाता है। इसका अर्थ है कि अभी जनप्रतिनिधि अधिनायकवादी की भूमिका निभा रहे हैं। वे जनता का सेवक नहीं, राजसी। ठाट–बाट में लिप्त तानाशाह है। यह आजाद देश के लिए एक चिन्ता का विषय है। कवि व्यंग्य करते हुए एक कटु सत्य का वर्णन करता है कि क्या वे सच्चे जनप्रतिनिधि हैं। अर्थात् नहीं हैं।

3. *पूरब–पश्चिम से आते हैं*
नंगे–बूचे नरकंकाल
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता है।

व्याख्या–प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग–2 के रघुवीर सहाय विरचित 'अधिनायक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने सत्तावर्ग के द्वारा जनता के शोषण का जिक्र किया है। यह एक व्यंग्य कविता है।

कवि के अनुसार राष्ट्रीय त्योहारों के अवसर पर सभी दिशाओं से जो जनता आती है वह नंगे पांव है। वह इतनी गरीब है कि केवल नरकंकाल का रूप हो गयी है। उसकी गाढ़ी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा सिंहासन पर बैठा जनप्रतिनिधि हड़प लेता है। गरीब जनता के पैसे से ही वह मेडल पहनता है। मंच पर फूलों की माला पहनता है। वह राज–सत्ता का भोग करता है। शेष जनता गरीबी को मार से परेशान है।

कवि रघुवीर सहाय ने उक्त पंक्तियों में सत्ता–वर्ग के तानाशाहों का व्यंग्यात्मक चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। स्वतंत्र देश की यह दुर्दशा राजनेताओं की ही देन है। वे स्वयं राज–योग में लिप्त हैं और जनता गरीबी और लाचारी की मार झेल रही है।

4. *कौन–कौन वह जन–गण–मन*
अधिनायक वह महाबली
डरा हुआ मन बेमन जिसका
बाजा रोज बजाता है।

व्याख्या–प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्य पुस्तक दिगंत भाग–2 के रघुवीर सहाय विरचित "अधिनायक" शीर्षक कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने राष्ट्रीय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द पर कटाक्ष किया है।

कवि ने कविता के अन्तिम पद में कौन–कौन दो बार प्रयोग कर यह बताने का प्रयास किया है कि जन–गण–मन अधिनायक एक नहीं अनेक हैं। आज देश में तानाशाहों की संख्या बढ़ गई है। वे अब महाबली का रूप धारण कर लिया है। अर्थात् देश की सम्पूर्ण शक्ति इन कुछ गिने–चुने अधिनायकों के हाथों में सीमित हो गई है। बाकी जनता डरी हुई है। सहमी हुई है और बिना इच्छा के राष्ट्रीय गान रूपी बाजा बजाती रहती है।

अतः अब इस राष्ट्रीय गान में आम आदमी की कोई रुचि नहीं रह गई है। राष्ट्रीय त्योहार पर वे केवल खानापूर्ति करते हैं। बेमन से वे राष्ट्रीय गान गाते हैं। उन्हें वास्तविक आजादी नहीं मिली है। आजादी का सुख उन्हें नहीं मिला। यह सुख मुट्ठी भर लोगों में सिमट कर रह गया है। देश के लिए यह अच्छा संदेश नहीं।